कक्षा 6 | हिंदी (मल्हार)

अध्याय 2 : गोल (मेजर ध्यानचंद का संस्मरण)

अभ्यास वर्कशीट – सेट 2

नाम: ____ दिनांक: ______________

कक्षा/सेक्शन: _____________

खंड (अ) – बहुविकल्पीय प्रश्न

निर्देश: सही उत्तर चुनकर लिखिए।

1. **भारत में मेजर ध्यानचंद के जन्मदिन को किस रूप में मनाया जाता है?**
   (क) गणतंत्र दिवस
   (ख) राष्ट्रीय खेल दिवस
   (ग) स्वतंत्रता दिवस
   (घ) शिक्षक दिवस

2. **भारत का सर्वोच्च खेल पुरस्कार किसके नाम पर है?**
   (क) अर्जुन पुरस्कार
   (ख) खेल रत्न (ध्यानचंद के नाम पर)
   (ग) पद्म पुरस्कार
   (घ) भारत रत्न

3. **ध्यानचंद का परिवार बाद में कहाँ आकर बस गया?**
   (क) दिल्ली
   (ख) झाँसी
   (ग) लखनऊ
   (घ) मुंबई

4. **सन 1933 में ध्यानचंद किस टीम की ओर से खेल रहे थे?**
   (क) ब्राह्मण रेजिमेंट
   (ख) पंजाब रेजिमेंट
   (ग) सैंपर्स एंड माइनर्स
   (घ) सेना की राष्ट्रीय टीम

5. **ध्यानचंद की पंजाब रेजिमेंट का मुकाबला किस टीम से हो रहा था?**

CBSEClassWorksheets

(क) सिख रेजिमेंट से

(ख) सैंपर्स एंड माइनर्स टीम से

(ग) मद्रास रेजिमेंट से

(घ) गोरखा रेजिमेंट से

6. **हॉकी स्टिक लगने के बाद ध्यानचंद मैदान में दोबारा कैसे लौटे?**

(क) बिना किसी इलाज के

(ख) पट्टी बाँधकर

(ग) डॉक्टर के साथ

(घ) अगले दिन

7. **ध्यानचंद के अनुसार सफलता के सबसे बड़े मंत्र क्या हैं?**

(क) पैसा और प्रसिद्धि

(ख) लगन, साधना और खेल भावना

(ग) कठोर अनुशासन और भय

(घ) किस्मत और संयोग

8. **उनकी छावनी में हॉकी अभ्यास के समय के बारे में पाठ में क्या बताया गया है?**

(क) सुबह 6 बजे का समय निश्चित था

(ख) कोई निश्चित समय नहीं था

(ग) शाम को समय निश्चित था

(घ) केवल रविवार को अभ्यास होता था

9. **ध्यानचंद की हमेशा यह कोशिश रहती थी कि–**

(क) सारे गोल खुद करें

(ख) गेंद गोल के पास ले जाकर साथी को दें

(ग) विरोधी टीम को नीचा दिखाएँ

(घ) सबसे तेज़ दौड़ें

10. **पाठ के अनुसार बुरा काम करने वाला व्यक्ति किस बात से डरता है?**

(क) पुलिस से

(ख) कि उसके साथ भी बुराई होगी

(ग) हार से

(घ) समाज की निंदा से

खंड (आ) – रिक्त स्थान भरें

CBSEClassWorksheets

निर्देश: नीचे दिए गए वाक्यों में उपयुक्त शब्द भरकर वाक्य पूरा कीजिए।

1. सन ________ की बात है जब यह घटना हुई।
2. ध्यानचंद उन दिनों ________ रेजिमेंट की ओर से खेला करते थे।
3. मुकाबला पंजाब रेजिमेंट और ________ टीम के बीच हो रहा था।
4. एक खिलाड़ी ने गुस्से में ध्यानचंद के सिर पर ________ से मार दी।
5. ध्यानचंद को मैदान से ________ ले जाया गया।
6. थोड़ी देर बाद वे ________ बाँधकर फिर मैदान में आ गए।
7. ध्यानचंद ने एक के बाद एक झटपट ________ गोल कर दिए।
8. ध्यानचंद के अनुसार सफलता के सबसे बड़े मंत्र ________, साधना और खेल भावना हैं।
9. भारत मेजर ध्यानचंद के जन्मदिन को ________ के रूप में मनाता है।
10. भारत का सर्वोच्च खेल पुरस्कार ________ उनके नाम पर दिया जाता है।

खंड (इ) – सत्य/असत्य बताइए

निर्देश: निम्नलिखित कथनों के सामने 'सत्य' या 'असत्य' लिखिए।

1. सन 1933 में पंजाब रेजिमेंट और सैंपर्स एंड माइनर्स टीम के बीच मुकाबला हो रहा था।(__________)
2. विरोधी खिलाड़ी ने गुस्से में ध्यानचंद के पैर पर हॉकी स्टिक मारी थी। (__________)
3. ध्यानचंद चोट लगने के बाद मैदान में वापस नहीं लौटे। (__________)
4. ध्यानचंद ने बदला लेने के लिए उस खिलाड़ी को फिर से चोट पहुँचाई। (__________)
5. ध्यानचंद ने उस मैच में झटपट छह गोल किए। (__________)
6. मैच के बाद ध्यानचंद ने उस खिलाड़ी को कड़ी डाँट लगाई। (__________)
7. 'सैंपर्स एंड माइनर्स टीम' अंग्रेज़ों के समय का एक हॉकी दल था। (__________)
8. 'लांस नायक' भारतीय सेना का एक पद है। (__________)
9. ध्यानचंद के अनुसार सफलता का कोई गुप्त या जादुई नुस्खा होता है। (__________)
10. उनकी छावनी में हॉकी खेलने का एक निश्चित समय होता था। (__________)

खंड (ई) – दो पंक्तियों में उत्तर दीजिए

1. **सन 1933 में कौन-सी दो टीमों के बीच मुकाबला हो रहा था?**

CBSEClassWorksheets

2. **विरोधी खिलाड़ी ने ध्यानचंद के साथ क्या किया?**

3. **ध्यानचंद ने घायल होने के बाद क्या किया?**

4. **ध्यानचंद ने उस खिलाड़ी से बदला कैसे लिया?**

5. **मैच के बाद ध्यानचंद ने उस खिलाड़ी से क्या कहा?**

6. **ध्यानचंद के अनुसार बुरा काम करने वाला व्यक्ति किस बात से डरता है?**

7. **ध्यानचंद की रेजिमेंट के बारे में क्या बताया गया है?**

8. **छावनी में हॉकी अभ्यास के बारे में पाठ में क्या बताया गया है?**

9. **'सूबेदार' और 'लांस नायक' पदों में पाठ के अनुसार क्या अंतर बताया गया है?**

CBSEClassWorksheets

10.**इस घटना से ध्यानचंद के स्वभाव के बारे में क्या पता चलता है?**

खंड (उ) – संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए

निर्देश: निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर 5-8 पंक्तियों में लिखिए।

1. **ध्यानचंद की सेना में भर्ती से लेकर बर्लिन ओलंपिक तक की यात्रा का वर्णन करें।**

2. **इस संस्मरण से हमें क्रोध और बदले के बारे में क्या सीख मिलती है?**

3. **ध्यानचंद के अनुसार सफलता का राज क्या था? इस पर अपने विचार लिखें।**

4. **पंजाब रेजिमेंट और सैंपर्स एंड माइनर्स टीम के मैच की घटना को अपने शब्दों में लिखें।**

CBSEClassWorksheets

5. **खेल भावना (Sportsmanship) क्यों महत्वपूर्ण है? ध्यानचंद के उदाहरण से समझाएँ।**

खंड (ऊ) – किसने किससे कहा?

निर्देश: निम्नलिखित कथनों को पढ़कर पूछे गए प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. **घायल होने के बाद मैदान में लौटते ही ध्यानचंद ने उस खिलाड़ी से क्या कहा था? पंक्ति लिखिए और बताइए किससे कही गई।**

2. **मैच समाप्त होने के बाद ध्यानचंद ने उस खिलाड़ी की पीठ थपथपाते हुए क्या कहा? संक्षेप में दो बातें लिखिए।**

3. **जब लोग ध्यानचंद से उनकी सफलता का राज जानना चाहते थे, तो उन्होंने क्या उत्तर दिया?**

4. **खेलते समय ध्यानचंद अपने मन में किस बात को सबसे ऊपर रखते थे? उनके शब्दों में लिखिए।**

CBSEClassWorksheets

5. **ध्यानचंद ने अपने खेलने के तरीके के बारे में यह कैसे स्पष्ट किया कि सारे गोल वे खुद नहीं करते थे? अपने शब्दों में बताइए।**

खंड (ऋ) – संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए

निर्देश: निम्नलिखित गद्यांशों को पढ़कर संदर्भ, प्रसंग और भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

1. **"तुम चिंता मत करो, इसका बदला मैं जरूर लूंगा।" – संदर्भ सहित व्याख्या करें।**

2. **"दोस्त, खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं।" – संदर्भ सहित व्याख्या करें।**

3. **"लगन, साधना और खेल भावना ही सफलता के सबसे बड़े मंत्र हैं।" – संदर्भ सहित व्याख्या करें।**

CBSEClassWorksheets

4. **"उन दिनों में, मैं पंजाब रेजिमेंट की ओर से खेला करता था।" – संदर्भ सहित व्याख्या करें।**

5. **"अपनी खेल भावना के कारण मैंने दुनिया के खेल प्रेमियों का दिल जीत लिया।" – संदर्भ सहित व्याख्या करें।**

CBSEClassWorksheets

उत्तर कुंजी (Answer Key)

अभ्यास वर्कशीट – सेट 2

खंड (अ) के उत्तर

1. राष्ट्रीय खेल दिवस [विकल्प (ख)]
2. खेल रत्न (ध्यानचंद के नाम पर) [विकल्प (ख)]
3. झाँसी [विकल्प (ख)]
4. पंजाब रेजिमेंट [विकल्प (ख)]
5. सैंपर्स एंड माइनर्स टीम से [विकल्प (ख)]

1. पट्टी बाँधकर [विकल्प (ख)]
2. लगन, साधना और खेल भावना [विकल्प (ख)]
3. कोई निश्चित समय नहीं था [विकल्प (ख)]
4. गेंद गोल के पास ले जाकर साथी को दें [विकल्प (ख)]
5. कि उसके साथ भी बुराई होगी [विकल्प (ख)]

खंड (आ) के उत्तर

1. 1933
2. पंजाब
3. सैंपर्स एंड माइनर्स
4. हॉकी स्टिक
5. बाहर
6. पट्टी
7. छह
8. लगन
9. राष्ट्रीय खेल दिवस
10. खेल रत्न

खंड (इ) के उत्तर

1. सत्य

CBSEClassWorksheets

2. असत्य
3. असत्य
4. असत्य
5. सत्य
6. असत्य
7. सत्य
8. सत्य
9. असत्य
10. असत्य

खंड (ई) के उत्तर

1. 1933 में 'पंजाब रेजिमेंट' और 'सैंपर्स एंड माइनर्स टीम' के बीच हॉकी मुकाबला हो रहा था। ध्यानचंद पंजाब रेजिमेंट की ओर से खेल रहे थे।
2. ध्यानचंद से गेंद न छीन पाने पर विरोधी खिलाड़ी ने गुस्से में उनके सिर पर हॉकी स्टिक मार दी, जिससे उन्हें मैदान से बाहर ले जाया गया।
3. ध्यानचंद ने पट्टी बँधवाकर थोड़ी देर बाद फिर मैदान में वापसी की और उस खिलाड़ी को बदला लेने की बात कही।
4. ध्यानचंद ने हिंसा से बदला नहीं लिया, बल्कि एक के बाद एक झटपट छह गोल करके अपने खेल-कौशल से बदला लिया।
5. मैच के बाद ध्यानचंद ने उसकी पीठ थपथपाते हुए कहा कि खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं और वे अपना बदला ले ही चुके हैं।
6. ध्यानचंद के अनुसार बुरा काम करने वाला व्यक्ति हमेशा इस बात से डरता रहता है कि उसके साथ भी वैसी ही बुराई की जाएगी।
7. ध्यानचंद की रेजिमेंट हॉकी खेल में काफी प्रसिद्ध थी, हालांकि शुरुआत में स्वयं ध्यानचंद को हॉकी में कोई दिलचस्पी नहीं थी।
8. पाठ के अनुसार छावनी में हॉकी खेलने का कोई निश्चित समय नहीं था; सैनिक जब चाहें मैदान में पहुँचकर अभ्यास शुरू कर देते थे।
9. पाठ के शब्दार्थ के अनुसार 'सूबेदार' स्वतंत्रता-पूर्व भारतीय सैन्य अधिकारियों का दूसरा सबसे बड़ा पद था, जबकि 'लांस नायक' सेना का एक अन्य पद था।

CBSEClassWorksheets

10. इस घटना से पता चलता है कि ध्यानचंद संयमी, खेल-भावना से भरे और क्षमाशील व्यक्ति थे, जिन्होंने हिंसा का जवाब हिंसा से नहीं बल्कि अपने खेल-कौशल से दिया।

खंड (उ) के उत्तर

1. ध्यानचंद 16 साल की उम्र में 'फर्स्ट ब्राह्मण रेजिमेंट' में एक साधारण सिपाही के रूप में भर्ती हुए। शुरुआत में उन्हें हॉकी में कोई खास रुचि नहीं थी, परंतु सूबेदार मेजर तिवारी के निरंतर प्रोत्साहन से उन्होंने हॉकी खेलना शुरू किया। छावनी में अभ्यास का कोई निश्चित समय न होने के कारण उन्हें खूब अभ्यास करने का अवसर मिला। जैसे-जैसे उनके खेल में सुधार आता गया, सेना में उनकी पदोन्नति भी होती गई और वे लांस नायक बने। सन 1936 में उन्हें बर्लिन ओलंपिक के लिए भारतीय हॉकी टीम का कप्तान बनाया गया, जहाँ उनके असाधारण खेल-कौशल ने उन्हें 'हॉकी का जादूगर' की उपाधि दिलाई और भारत ने स्वर्ण पदक जीता।

2. इस संस्मरण से हमें यह सीख मिलती है कि क्रोध में आकर हिंसक व्यवहार करना सही नहीं है। जिस खिलाड़ी ने ध्यानचंद को हॉकी स्टिक से मारा, वह क्रोध के वशीभूत था, परंतु ध्यानचंद ने उसी क्रोध का जवाब संयम और खेल-कौशल से दिया। उन्होंने हिंसा का बदला हिंसा से नहीं, बल्कि अपनी मेहनत और प्रतिभा से लिया। इससे पता चलता है कि सच्चा बदला वही होता है जो सकारात्मक तरीके से लिया जाए, न कि किसी को नुकसान पहुँचाकर। यह पाठ हमें सिखाता है कि गुस्से पर नियंत्रण रखना और सही रास्ता अपनाना ही सच्ची जीत है।

3. ध्यानचंद के अनुसार सफलता का कोई जादुई या गुप्त नुस्खा नहीं होता। उनका मानना था कि लगन (निरंतर मेहनत), साधना (अभ्यास) और खेल भावना (सच्ची भावना और टीम वर्क) ही सफलता के सबसे बड़े मंत्र हैं। मेरे विचार से यह बात आज भी पूरी तरह सत्य है, क्योंकि बिना कठिन परिश्रम और सही दृष्टिकोण के कोई भी व्यक्ति किसी क्षेत्र में सच्ची सफलता प्राप्त नहीं कर सकता। यह बात केवल खेल पर ही नहीं, बल्कि पढ़ाई और जीवन के हर क्षेत्र पर लागू होती है।

4. सन 1933 में पंजाब रेजिमेंट और सैंपर्स एंड माइनर्स टीम के बीच एक रोमांचक हॉकी मुकाबला हो रहा था। ध्यानचंद पंजाब रेजिमेंट की ओर से खेल रहे थे और विरोधी खिलाड़ी उनसे गेंद नहीं छीन पा रहे थे। इससे गुस्साए एक खिलाड़ी ने ध्यानचंद के सिर पर हॉकी स्टिक से चोट पहुँचाई, जिससे उन्हें मैदान से बाहर ले जाना पड़ा। पट्टी बँधवाकर ध्यानचंद वापस मैदान में आए और शांत स्वर में उस खिलाड़ी को बदला लेने की चेतावनी दी। डर के कारण वह खिलाड़ी ध्यानचंद पर ही नज़र रखता रहा, और इस बीच ध्यानचंद ने तेज़ी से छह गोल कर दिए। मैच के बाद उन्होंने उस खिलाड़ी को दोस्ताना ढंग से समझाया, जिससे वह बहुत शर्मिंदा हुआ।

5. खेल भावना का अर्थ है खेल को सही तरीके से, ईमानदारी और सम्मान के साथ खेलना, चाहे जीत मिले या हार। यह किसी भी खिलाड़ी के चरित्र की पहचान होती है। मेजर ध्यानचंद इसके सबसे बड़े उदाहरण हैं – उन्होंने खुद चोट खाने के बाद भी विरोधी खिलाड़ी से बदला हिंसा से

नहीं, बल्कि अपने खेल-कौशल से लिया और बाद में उससे दोस्ताना व्यवहार किया। साथ ही, वे व्यक्तिगत श्रेय की बजाय अपने साथी खिलाड़ियों को आगे बढ़ाते थे। खेल भावना इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह न केवल खेल को बेहतर बनाती है, बल्कि जीवन में भी सहयोग, संयम और सम्मान जैसे मूल्यों को सिखाती है।

खंड (ऊ) के उत्तर

1. ध्यानचंद ने कहा – "तुम चिंता मत करो, इसका बदला मैं जरूर लूंगा।" यह बात उन्होंने उस विरोधी खिलाड़ी से कही, जिसने गुस्से में उन्हें हॉकी स्टिक से मारा था।
2. ध्यानचंद ने पहली बात कही – "दोस्त, खेल में इतना गुस्सा अच्छा नहीं।" दूसरी बात में उन्होंने समझाया कि अपना बदला तो वे गोल करके ले ही चुके हैं, और यदि उन्हें चोट न पहुँचाई जाती, तो वे सिर्फ दो गोल के अंतर से जीतते। यह बात उन्होंने उसी खिलाड़ी से कही जिसने उन्हें चोट पहुँचाई थी।
3. ध्यानचंद ने कहा – "लगन, साधना और खेल भावना ही सफलता के सबसे बड़े मंत्र हैं।" यह उत्तर उन्होंने उन सभी बच्चों और बुज़ुर्गों को दिया जो उनसे यह जानना चाहते थे।
4. ध्यानचंद के शब्दों में – "हार या जीत मेरी नहीं, बल्कि पूरे देश की है।" यह विचार वे खेलते समय हमेशा अपने मन में रखते थे, जो उनकी देशभक्ति की भावना को दर्शाता है।
5. ध्यानचंद ने बताया कि उनकी हमेशा यह कोशिश रहती थी कि वे गेंद गोल के पास ले जाकर अपने किसी साथी खिलाड़ी को दे दें, जिससे गोल करने का श्रेय उस साथी को मिल जाए। यह बात उन्होंने अपने पाठकों को अपनी टीम भावना समझाने के लिए कही।

खंड (ऋ) के उत्तर

1. संदर्भ – यह पंक्ति मेजर ध्यानचंद द्वारा रचित संस्मरण 'गोल' से ली गई है। प्रसंग – यह पंक्ति तब कही गई जब ध्यानचंद हॉकी स्टिक से घायल होने के बाद पट्टी बाँधकर मैदान में वापस लौटे और उस खिलाड़ी से यह बात कही। भावार्थ – इसका अर्थ है कि ध्यानचंद ने उस खिलाड़ी को शांत स्वर में चेतावनी दी कि वे अपने खेल-कौशल से उसे सबक सिखाएँगे, हिंसा से नहीं।
2. संदर्भ – यह पंक्ति 'गोल' संस्मरण से ली गई है। प्रसंग – मैच समाप्त होने के बाद ध्यानचंद ने उस खिलाड़ी की पीठ थपथपाते हुए यह बात कही, जिसने उन्हें चोट पहुँचाई थी। भावार्थ – इसका अर्थ है कि ध्यानचंद अपने छह गोल करके ही असली बदला ले लिया था और वे चाहते थे कि वह खिलाड़ी खेल में अनुचित क्रोध न दिखाए।
3. संदर्भ – यह पंक्ति मेजर ध्यानचंद के संस्मरण 'गोल' से है। प्रसंग – यह पंक्ति तब आती है जब लेखक बताते हैं कि लोग उनसे सफलता का राज पूछते हैं और उनके पास कोई गुप्त

CBSEClassWorksheets

नुस्खा नहीं है। भावार्थ – इसका अर्थ है कि निरंतर मेहनत, अभ्यास और खेल को सच्ची भावना से खेलना ही वास्तविक सफलता की कुंजी है।

4. संदर्भ – यह पंक्ति 'गोल' संस्मरण से ली गई है। प्रसंग – यह पंक्ति संस्मरण की शुरुआत में आती है, जब लेखक 1933 की घटना का वर्णन शुरू करते हैं। भावार्थ – इससे पता चलता है कि लेखक अपने पुराने दिनों की याद साझा कर रहे हैं, जब वे पंजाब रेजिमेंट की हॉकी टीम का हिस्सा थे।

5. संदर्भ – यह पंक्ति मेजर ध्यानचंद के संस्मरण 'गोल' से ली गई है। प्रसंग – यह पंक्ति बर्लिन ओलंपिक में उनके खेलने के तरीके और साथी खिलाड़ियों को आगे बढ़ाने की भावना के प्रसंग में आती है। भावार्थ – इसका अर्थ है कि अपनी निःस्वार्थ खेल भावना के कारण ध्यानचंद ने केवल भारत में ही नहीं, बल्कि पूरी दुनिया में खेल प्रेमियों का सम्मान और प्रेम अर्जित किया।

CBSEClassWorksheets